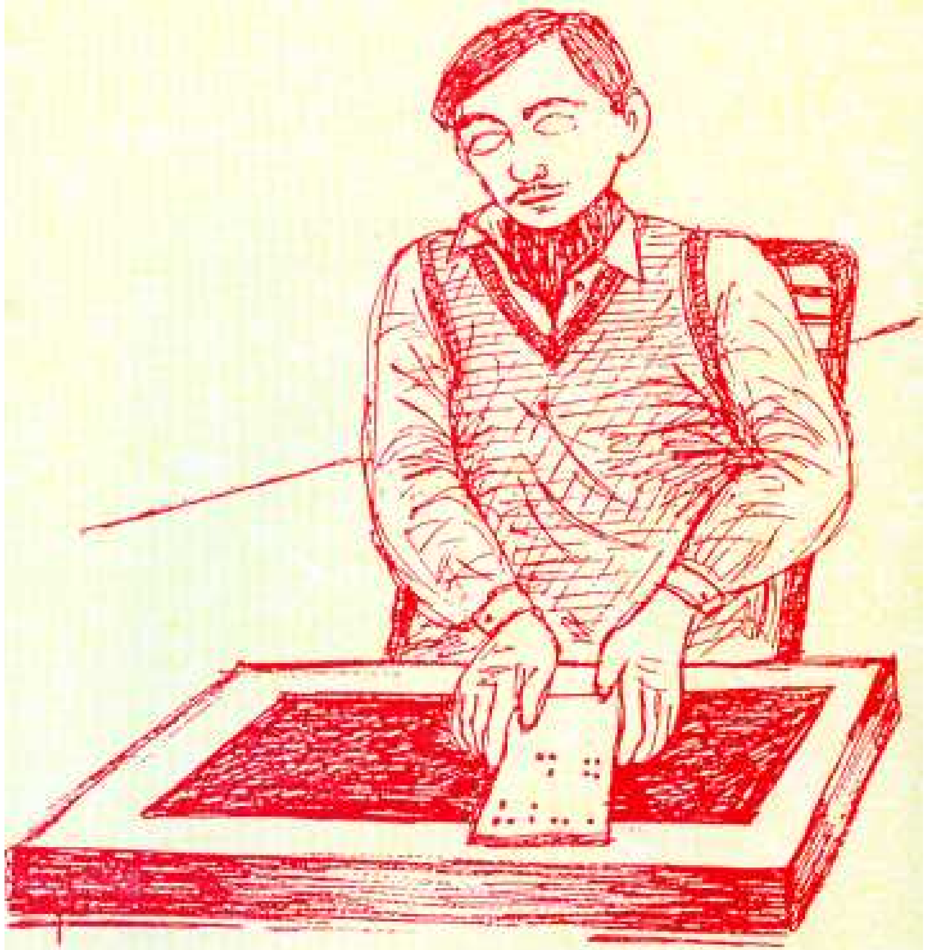

लुई ब्रेल

अरविन्द गुप्ता

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

लुई ब्रेल : *Louis Braille*
प्रस्तुति : अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

रेखांकन: अविनाश देशपांडे एवं
'चकमक' से साभार
ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष : 1999, 2000, 2002, 2005, 2006

Price : 10 Rupees
मूल्य: 10 रुपए

Published by Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket, New Delhi - 110017
Phone : 011 - 6569943
Fax : 91 - 011 - 6569773
email: bgvs@vsnl.net

लुई ब्रेल

अरविन्द गुप्ता.

लुई ब्रेल

लुई अपने घर के बाहर बैठा था। आसमान साफ था और रुई के गोलों जैसे बड़े–बड़े बादल आसमान में तैर रहे थे। पास के खेत में किसान हल चला रहे थे। दूर चारागाह में कई गाएं चर रही थीं। एक तितली सूरजमुखी के फूलों पर मंडरा रही थी। परंतु लुई इस सबका आनंद नहीं ले सकता था। पांच साल का लुई ब्रेल दोनों आंखों से देख नहीं सकता था।

वह हमेशा से ही ऐसा नहीं था। एक समय ऐसा था जब वह अन्य लोगों की तरह भली–भांति देख सकता था। वह अपने जीवन के पहले तीन सालों तक प्रकृति की मनोरम छटा को देख सकता था। वो आकाश में उड़ती चिड़ियों का आनंद ले सकता था। वह फ्रांस में स्थित अपने छोटे से शहर कूपरवे के गली–कूचों को निहार सकता था। अपने माता–पिता, भाई–बहन और पास–पड़ोसियों को पहचान सकता था। परंतु एक दिन सब कुछ बदल गया।

लुई के पिता साईमन ब्रेल, घोड़ों पर बैठने की चमड़े की जीन बनाते थे। वह अपनी कारीगिरी के लिए पूरे फ्रांस में मशहूर थे। लुई के पिता जब औज़ारों से चमड़ा काटते और सिलाई करते तो उसे यह सब देखने में बड़ा मज़ा आता। लुई केवल तीन साल का था इसलिए वह अपने पिता की कोई खास मदद तो नहीं कर सकता था। पर उसने बड़े होकर अपने पिता के धंधे को ही अपनाने का निश्चय किया था।

साईमन लुई की वर्कशाप देखने काबिल थी। दीवार पर चमड़े को काटने और उनमें छेद करने के लिए कई प्रकार के चाकू और सूजे और औज़ार लटके थे। लुई उन सभी औज़ारों को छूने की कोशिश भी करता तो उसके पिता उसको झिड़क देते। पिता को लगता था कि उनके छोटे से बेटे को उन नुकीले और धारदार औज़ारों से कहीं चोट न लग जाए।

एक दिन की बात है कि लुई के पिता शहर से बाहर चमड़ा लेने के लिए गए थे। मां पीछे खेत में दोपहर के खाने के लिए सब्ज़ियां तोड़ने के लिए गईं थीं। बाकी अन्य लोग भी अपने–अपने काम में व्यस्त थे। किसी के पास भी नन्हे लुई के साथ खेलने का समय न था। कुछ देर तो लुई बाहर बाग में मटरगश्ती करता रहा। वह कभी किसी तितली को पकड़ने के लिए दौड़ता तो कभी डंडी से ज़मीन को खोदता। काफ़ी देर तक यह करते–करते वह ऊब गया। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या करे। चलते–चलते वह अपने पिता की वर्कशाप के सामने से गुज़रा। वर्कशाप का दरवाज़ा खुला था और अंदर कोई न था। औज़ारों की चमक और चमड़े की महक लुई को वर्कशाप के अंदर ले गई। मेज़ पर एक चमड़े का टुकड़ा पड़ा था और उसके पास ही चमड़े में छेद करने का एक नुकीला सूजा रखा था। लुई का मन न माना। उसने सूजे से चमड़े पर कुछ लिखने की कोशिश की। चमड़ा चिकना था। चमड़े पर से सूजा फिसला और सीधे लुई की दाईं आंख में लगा। लुई की चीख सुनकर मां दौड़ी–दौड़ी आईं। उन्होंने लुई की आंख को धोकर उस पर पट्टी बांधी। लुई की आंख में तेज़ खुजली हुई। उसने हाथ से अपनी आंख को रगड़ा। धीरे–धीरे उसे ऐसा लगा जैसे उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया हो। दाईं आंख से बाईं आंख में भी इंफेक्शन फैल गया और उसकी रोशनी भी कम होने लगी। कुछ दिनों बाद लुई को ऐसा लगा जैसे कि किसी ने उसकी आंखों के सामने काला पर्दा डाल दिया हो।

लुई इस हादसे की गंभीरता को समझने के लिए बहुत छोटा था। वह बार–बार अपनी मां से पूछता, "मां, सूरज कब निकलेगा? चंदामामा आसमान में कब निकलेगा?" मां इसका क्या जवाब देतीं? उन्हें मालूम था कि लुई अब अपनी आंखों से कभी भी चांद–सितारों को नहीं देख पाएगा।

नेत्रहीनों का जीवन

यह घटना लगभग दो सौ साल पुरानी है। आज नेत्रहीन बच्चों के लिए विशेष प्रकार के स्कूल हैं जिसमें वे लिखना–पढ़ना और अन्य कुशलताएं सीख सकते हैं। परंतु उन्नीसवीं शताब्दी के शुरू में ऐसी सुविधाएं नहीं थीं। नेत्रहीन न तो कुछ शिक्षा प्राप्त कर सकते थे और न ही कोई हुनर हासिल कर सकते थे। कुछ नेत्रहीन गाड़ियों और हलों में जानवरों की तरह जोते जाते थे तो कुछ सारी ज़िंदगी भर खदानों में कोयला लोड करने का काम करते थे। परंतु ज़्यादातर अंधे लोग भीख मांग कर ही अपना गुज़ारा चलाते थे। नेत्रहीनों की बहुत खराब हालत थी। कभी उन्हें खाना मिल जाता था और कभी भूखे पेट ही किसी पुल के नीचे या सड़क पर सोना पड़ता था।

ब्रेल परिवार नहीं चाहता था कि उनका बच्चा भी ऐसी ही ज़िंदगी बसर करे। वह अपने बच्चे की ज़िंदगी को जितना संभव हो उतना सुखद बनाना चाहते थे।

यह कोई आसान काम नहीं था। आंखों से न देख पाने के कारण शुरू में तो लुई चलते वक्त आसपास की हरेक चीज़ से टकराता। सभी लोग उसे टकराते हुए देख कर चीखते, ''ठहरो''। परिवार के लोग चाहते थे कि लुई धीरे–धीरे अपने आप इधर–उधर जाना सीखे। वो अन्य लोगों पर आश्रित और निर्भर न रहे। मां–बाप लुई को अपना काम खुद करने के लिए प्रोत्साहित करते।

साईमन ब्रेल ने लुई को चमड़ा पालिश करना सिखाया। लुई पालिश करते समय चमड़े को देख तो नहीं सकता था परंतु उसे अपनी उंगलियों से चमड़े की चिकनाहट के बारे में पता चल जाता। वह देख तो नहीं सकता था परंतु अपनी उंगलियों से महसूस अवश्य कर सकता था।

लुई घर के काम में अपनी मां की भरपूर मदद करता था। वह रोज़ सुबह

उठ कर कुएं ऐ पीने का पानी भर कर लाता। आने–जाने का रास्ता काफ़ी ऊबड़–खाबड़ था। कभी–कभी वह रास्ते में किसी पत्थर से टकरा कर लुढ़क जाता और बाल्टी का सारा पानी बह जाता। परंतु धीरे–धीरे उसे हर कदम, हर डग की अच्छी तरह पहचान हो गई। पिता ने लुई के लिए एक पतली छड़ी बना दी। लुई चलते–चलते अपनी पथ–प्रदर्शक छड़ी को हवा में लहराता। अगर वह किसी वस्तु से टकराती तो वह तुरंत अपना रास्ता बदल देता। धीरे–धीरे वह चलने में इतना अभ्यस्त हो गया कि छड़ी के बिना भी उसे सामने आने वाली दीवार या अन्य रुकावट का आभास हो जाता। इसके लिए वह सीटी बजाता हुआ चलता था। सामने की दीवार या दरवाज़े से सीटी की आवाज़ टकराती और उसे कानों में वापिस सुनाई पड़ती। इससे उसे सामने आ रही अड़चन का आभास हो जाता। करोड़ों वर्षों से चमगादड़ अपना रास्ता ढूंढने के लिए इस ''सोनार'' तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं। चमगादड़ों की निगाह बहुत कमज़ोर होती है। अंधेरी गुफ़ाओं में वह उड़ते समय अपने मुंह से ऊंचे सुर की सीटी बजाते हैं। सीटी की आवाज़ आगे–आगे दौड़ती है। जब ध्वनि किसी कठोर वस्तु से टकराती है तो उसकी प्रतिध्वनि चमगादड़ों को वापिस सुनाई देती है, और वह टकराने से बचने के लिए अपनी दिशा बदल देते हैं।

लुई कुछ चीज़ों को उनकी खुशबू से जान लेता। परंतु अधिकतर चीज़ों की पहचान वह उनकी आवाज़ों से करता। वह शहर के तमाम लोगों को उनकी अलग–अलग आवाज़ों से पहचान लेता।

एक अच्छा दोस्त

लुई अन्य बच्चों से अलग था। परंतु जब लोग कहते, ''देखो बेचारा लुई कहां जा रहा है,'' तो उसे बहुत गुस्सा आता। यह सच था कि वह बहुत से काम नहीं कर सकता था। वह किताबें नहीं पढ़ सकता था। वह छिपा–छिली या आंच–मिचौनी नहीं खेल सकता था। परंतु वो बहुत से काम करना सीख गया था। शहर में एक नए पादरी आए। उनके आने से लुई के जीवन में एक नई रोशनी आ गई। वह हफ्ते में चार दिन लुई को चर्च में बुलाते और उसे इतिहास और विज्ञान के बारे में रोचक कहानियां सुनाते। इन कहानियों को लुई अपनी सारी ज़िंदगी भर नहीं भूला। पादरी महोदय एक व्यस्त व्यक्ति थे और धीरे–धीरे लुई ऐसे सवाल पूछने लगा, जिनका जवाब पादरी को भी नहीं मालूम था।

उस शहर में केवल एक स्कूल था और उसमें एक नए टीचर आए थे। पादरी ने टीचर से जाकर पूछा कि क्या वो लुई को अपने स्कूल में पढ़ने की अनुमति देंगे? परंतु स्कूल का कमरा बहुत छोटा था और पहले ही बच्चों से खचाखच भरा था। परंतु टीचर पादरी की बात को टाल न सके और अंततः लुई ने स्कूल जाना शुरू कर दिया। वह

कुछ पढ़ तो नहीं सकता था परंतु वह बहुत एकाग्रता और ध्यान से सब कुछ सुनता और उसे याद रखने की कोशिश करता। यही एक तरीका था जिसके द्वारा वह सीख सकता था। उसकी याददाश्त तो पहले से ही अच्छी थी। परंतु अभ्यास से वह और अच्छी हो गई थी। टीचर की बताई हुई कोई भी बात उसे महीनों तक याद रहती! वो गणित के प्रश्नों को भी अपने दिमाग में ही तेज़ी से हल करने की कोशिश करता। परंतु जब टीचर कहते, ''बच्चों अपनी किताब का पेज 68 खोलो और पढ़ो,'' तो उसका दिल बैठ जाता। कभी-कभी वह किताब पर लिखी पंक्तियों को अपनी उंगलियों से छूता। परंतु स्पर्श से वह कुछ पहचान न पाता। वह इतना अवश्य समझने लगा था कि किताबों में दुनिया भर की अद्‌भुत जानकारी भरी पड़ी है। परंतु क्या वह उन किताबों को कभी पढ़ पाएगा?

अक्सर लोग उसकी बातों का तसल्ली से जवाब देते थे। परंतु कभी-कभी व्यस्तता के कारण उसके प्रश्नों को टाल जाते थे। काश, लुई खुद पढ़ पाता और अपने सवालों का जवाब खुद ढूंढ पाता? इस अंधेरी दुनिया में कोई तो रास्ता होगा? लुई उसे अवश्य खोजने की कोशिश करेगा।

लुई अब दस बरस का होना वाला था। गांव के स्कूल में वह बस कुछ दिन ही और जा सकता था। इसी बीच पादरी को पता चला कि पेरिस में अंधे बच्चों का एक स्कूल है। पादरी ने उसे स्कूल के बारे में जानकारी मंगाई।

यह नेत्रहीनों के लिए एक विशेष स्कूल था। काफ़ी पत्र व्यवहार के बाद लुई को पेरिस में स्थित रॉयल इंस्टिट्यूट फार द ब्लाइंड में दाखिला मिला। लुई के मां-बाप उसे अपने से दूर नहीं भेजना चाहते थे। लुई केवल दस साल का था और वह यहां अपने शहर कूपरवे में खुश था। परंतु पादरी ने उनसे काफ़ी आरज़ू-मिन्नतें कीं। पादरी ने कहा, ''देखो लुई अब बड़ा हो रहा है। वह अन्य बच्चों से अलग है और उसमें नया सीखने की बहुत ललक है। इसलिए उसे एक विशेष स्कूल में ही जाना चाहिए।'' अंत में लुई के मां-बाप राज़ी हो गए।

नया स्कूल

फरवरी 1819 में लुई एक घोड़ागाड़ी में बैठ कर पेरिस के लिए रवाना हुआ। हिचखोले खाती गाड़ी में लुई नए स्कूल के सपने संजो रहा था। परंतु वहां पहुंचने पर उसने स्कूल को अपनी कल्पना से बिल्कुल अलग पाया। नया स्कूल बहुत बड़ा था और वह उसमें पहले-पहले तो एकदम सहम गया।

उसमें करीब सौ नेत्रहीन बच्चे पढ़ते थे और वहां बहुत शोरगुल होता था। उसे सभी छात्रों के नाम बताए गए। वह इतने सारे साथियों के साथ कभी भी नहीं पढ़ा था। लुई बहुत अकेलापन महसूस करने लगा।

दस वर्षीय लुई अपने मां–बाप से कभी भी दूर नहीं रहा था। उसे रह–रह कर घर की याद सताने लगी। अंत में वह तकिए में मुंह छिपा कर ज़ोर–ज़ोर से रोने लगा। तभी किसी ने उसे एक रुमाल थमाया और दोस्ती की आवाज़ में कहा, ''पहले दिन सभी बच्चों को ऐसा ही लगता है। मैं भी पहली रात को रोया था फिर बाद में सब ठीक हो गया।'' इस लड़के का नाम गेबरियल था। वह लुई का पहला मित्र बना।

लुई को इस अजनबी जगह में एक मित्र की ज़रूरत थी। इस बड़े शहर में हर जगह बहुत भीड़ और गंदगी थी। वह गांव से आया था जहां धूप और साफ हवा की कमी न थी। वह अपने घर में रोज़ाना तालाब में जाकर नहाया करता था। परंतु इस स्कूल में सौ बच्चों के नहाने के लिए मात्र एक गुसलखाना था!

स्कूल की बड़ी इमारत छोटे लुई के लिए किसी भूलभुलइया से कम न थी। इतने सारे गलियारे, बरामदे, कमरे और सीढ़ियां। लुई अक्सर अपना रास्ता भूल जाता था। पर अब उसके कई और दोस्त बन गए थे। जल्द ही वह स्कूल की इमारत से अच्छी तरह परिचित हो गया। सुबह से शाम तक स्कूल में वह अब इतना व्यस्त रहता कि उसे दुखी होने के लिए समय ही नहीं मिलता था!

सिर्फ एक बार सुन लेने के बाद पाठ सदा के लिए लुई के दिमाग में अंकित हो जाता था। उसकी उम्र केवल दस वर्ष की थी और शायद वह स्कूल में सबसे छोटा था। फिर भी वह सभी विषयों में अपने साथियों से आगे रहता था। दोपहर के बाद बच्चे स्कूल की वर्कशाप में बुनाई और चमड़े की चप्पलें बनाने का काम सीखते। हाथ के काम में लुई बहुत दक्ष था। पिता की

वर्कशाप में उसे अच्छी ट्रेनिंग मिली थी। पहले साल ही लुई को सबसे अच्छी बुनाई और चप्पलें बनाने के लिए पुरस्कार मिला। शाम को लुई संगीत सीखता। उसने कई वाद्य–यंत्र बजाना सीखे। परंतु उसे पियानो बजाने में परम आनंद मिलता था। संगीत से उसका जीवन सदा के लिए खुशियों से भर गया।

कभी–कभी स्कूल की ओर से बच्चों को पेरिस शहर घुमाने ले जाया जाता था। नेत्रहीन बच्चों का शहर की भीड़ में खो जाने का डर बना रहता था। इसीलिए सभी बच्चों को एक लंबी रस्सी पकड़ कर चलना पड़ता था। कुछ समय बाद लुई पेरिस के गली–मुहल्लों को उनकी आवाज़ों ओर खुशबुओं से अच्छी तरह पहचानने लगा।

पढ़ने में कठिनाई

इस तरह दिन बीतते गए। लुई अपने नए स्कूल में खुश था परंतु एक बात उसे हमेशा खटकती रहती थी। नेत्रहीन छात्रों के लिए पढ़ने के लिए किताबें

नहीं थीं। उस समय नेत्रहीनों के पढ़ पाने का केवल एक तरीका था। इस विधि में हर अक्षर को कागज़ पर उभार कर छापा जाता था जिससे कि छू कर उसे महसूस किया जा सके। कुछ अक्षरों को इस प्रकार स्पर्श करके पहचान पाना तो आसान था। परंतु कुछ अक्षरों को पहचानने में बहुत मुश्किल होती थी। उदाहरण के लिए **B** एकदम **R** जैसे महसूस होते थे। लुई ने इसे सीखने में बहुत मेहनत की।

धीरे–धीरे वह स्पर्श करके अलग–अलग अक्षरों को पहचानने लगा और उन्हें जोड़–जोड़ कर शब्द पढ़ने लगा। परंतु इस तरीके से पढ़ने में बहुत समय लगता था। अंत तक पहुंचने से पहले ही आप शुरू की बात भूल जाते थे! इस तरीके के उपयोग से शायद एक किताब को पढ़ने में ही महीनों लग जाते। उस समय तक यही पद्धति ही सबसे उपयुक्त समझी जाती थी।

नेत्रहीनों के लिए पुस्तकें बनाने के कई प्रयास हुए थे। उभरे अक्षर, डोर के बने अक्षर, लकड़ी और मोम के बने अक्षर। इस दिशा में अनेकों प्रयास हुए थे। परंतु इन सभी तकनीकों में अनेकों खामियां थीं। इसका नतीज़ा यह था कि लुई के स्कूल के मुख्य पुस्तकालय में नेत्रहीनों के लिए केवल पंद्रह पुस्तकें थीं! उभरे हुए अक्षरों की पुस्तकों का निर्माण एक बहुत मंहगा काम था। इसमें हरेक अक्षर इतना बड़ा होता था कि हर पन्ने में केवल कुछ ही शब्द आ पाते थे। इससे किताबें बहुत मोटी और भारी–भरकम हो जातीं थीं। इस तरीके द्वारा अंधे बच्चों के लिए अधिक पुस्तकों का छापना लगभग असंभव था।

पुस्तकों के बिना नेत्रहीन बच्चों का जीवन घोर अंधकार में था। खुद पढ़ कर ही वे दुनिया जहान की जानकारी हासिल कर सकते थे। किताबें होतीं तो वो बहुत कुछ पढ़ सकते थे और सीख सकते थे। परंतु पुस्तकों के अभाव में उनका भविष्य अंधकारमय था।

उन्हीं दिनों कैप्टन बारबियर स्कूल में आए। उन्होंने सैनिकों के लिए एक अनोखी लिपि का आविष्कार किया था। इस लिखाई को छूकर, रात के अंधेरे में भी पढ़ा जा सकता था। इस लिपि में कागज़ की लंबी पट्टी पर नुकीले सूजे से छेद किए जाते थे। जब कागज़ को पलटा जाता था तो उभरी हुई बिंदियों को उंगलियों के स्पर्श से महसूस करके पढ़ा जा सकता था। इस लिपि में ध्वनियों का उपयोग होता था। प्रत्येक ध्वनि को बिंदियों के एक विशेष नमूने से दर्शाया जाता था। शायद फौजियों के लिए विकसित यह खुफिया लिपि नेत्रहीन बच्चों के लिए भी कुछ काम आए?

इस लिपि में इस्तेमाल की गई बिंदियों की कई बातें तो बहुत अच्छी थीं। बिंदियां इतनी छोटी थीं कि उन्हें उंगली के पोरे तले महसूस किया जा सकता था। पर उसमें कुछ खामियां भी थीं। यह लिपि सरल और छोटे–छोटे संदेश भेजने के लिए तो ठीक थी परंतु शायद पुस्तकें लिखने के लिए नहीं।

कैप्टन बारबियर की लिपि नेत्रहीनों के लिए तो ठीक नहीं थी पर जिन बिंदियों का उन्होंने इस्तेमाल किया था शायद उन्हें नेत्रहीनों के लिए किसी दूसरे रूप में अपनाया जा सके? लुई अब दिन–रात इसी के बारे में सोचता रहता था। जल्द ही लुई ने इस पर काम आरंभ किया। वह बिंदियों से एक ऐसी विधि विकसित करना चाहता था जिससे कि नेत्रहीन आसानी से लिख–पढ़ सकें।

लुई इस काम में दिलो–जां से लग गया। वह जहां भी जाता वहां पर मोटे कागज़ और कागज़ में छेद करने के लिए सूजा और एक तख्ती साथ लेकर जाता। कैप्टन बारबियर को जब इस बात का पता चला कि एक लड़का उनकी विधि में सुधार कर रहा है तो वो लुई के स्कूल में आए। वो एक तुनकमिज़ाज़ व्यक्ति थे और वो यह स्वीकार करने को तैयार नहीं थे कि एक बाहर वर्ष का नेत्रहीन बालक उनके तरीके को सुधार कर उसे और बेहतर बना सकता है। नेत्रहीन बच्चे अगर दो –चार वाक्य पढ़ लें तो क्या यह उनके

लिए काफ़ी नहीं है? मोटी–मोटी पुस्तकें पढ़कर वो क्या करेंगे? मीटिंग के बाद लुई को कैप्टन बारबियर से सहायता की कोई उम्मीद नहीं रही। उसे यह काम अकेले ही संपन्न करना होगा।

लुई अब हर समय अपने काम में व्यस्त रहता। जब वह छुट्टी पर घर गया तो वहां भी वह हर समय अपने सूजे से, मोटे कागज़ पर छेद करके बिंदियों के नमूने बनाता रहता। लोग उसके इस शौक पर अचरज करते। उसके पड़ोसी उससे कागज़ की बिंदियों के बारे में पूछते परंतु वह कोई जवाब दिए बिना अपने काम में लगा रहता।

स्कूल के व्यस्त कार्यक्रम के दौरान उसे सोचने और नए आविष्कार पर काम करने का बहुत कम समय मिलता था। परंतु वह खाने के पहले और रात के सोने से पहले रोज़ इस काम के लिए कुछ समय निकालता। कभी–कभी वो अपने काम में इतना खो जाता था कि उसे दिन और रात की सुधबुध भी नहीं रहती थी। कई बार तो वो भोजन करना ही भूल जाता था।

तीन साल तक इसी तरह पूरी लगन के साथ वह अपना शोध करता रहा। उसने कैप्टन बारबियर की पद्धति को काफ़ी सरल बनाया। परंतु अभी भी वह उतनी सरल नहीं थी जिससे कि नेत्रहीन बच्चे उससे आसानी से पढ़ना सीख सकें। बिंदियों से पढ़ पाना अभी भी बेहद मुश्किल काम था। कितने ही महारथियों ने इस समस्या से सैकड़ों सालों से जूझा था और वह सही हल नहीं ढूंढ पाए थे। जिस काम को बड़े–बड़े, पढ़े–लिखे दिग्गज नहीं कर पाए, क्या उसे एक पंद्रह बरस का नेत्रहीन बालक कर पाएगा?

एक दिन लुई के दिमाग में एक सरल सा विचार आया। कैप्टन बारबियर की पद्धति ध्वनियों पर आधारित थी। उसमें हर ध्वनि के लिए बिंदियों का एक नमूना था। फ्रेंच भाषा में इतनी ध्वनियां थीं कि उनके इस्तेमाल से शब्दों में बिंदियों की भरमार हो जाती थी। अगर वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के लिए बिंदियों का एक विशेष नमूना हो, तो क्या अच्छा नहीं होगा? वर्णमाला में

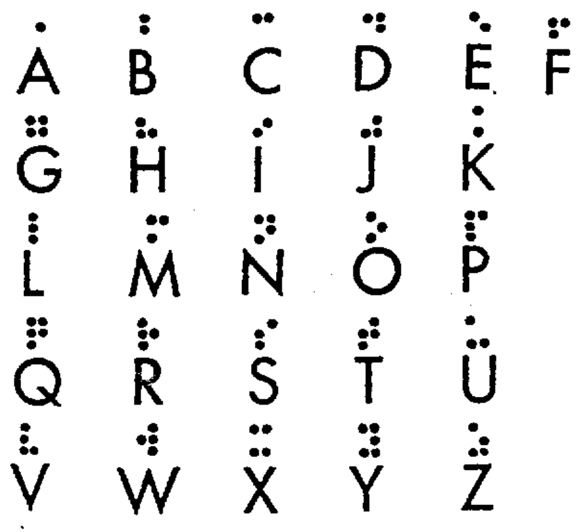

क्योंकि केवल 26 अक्षर हैं इसलिए इसमें केवल 26 बिंदियों के नमूनों की ज़रूरत ही होगी। लुई को अपनी इस क्रांतिकारी खोज पर यकीन नहीं हो रहा था।

पहले लुई ने मोटे कागज़ पर पेंसिल से छह बिंदियों का नमूना बनाया। यह बिल्कुल वैसा ही नमूना था जैसा कि लूडो के पासे के छह अंक वाली सतह पर होता है। फिर उसने उन बिंदियों पर 1 से 6 तक के अंक डाले। बाद में उसने सूजे से एक नंबर वाली बिंदी को ऊपर उठा दिया – अब यह नमूना अक्षर **A** को दर्शाएगा। नंबर एक और दो की बिंदियों को उठा देने से अक्षर **B** बन जाएगा। इस प्रकार लुई ने वर्णमाला के सभी अक्षरों के छह बिंदियों वाले नमूने बना डाले जो इस प्रकार थे।

यह तरीका एकदम सरल और आसान था। लुई की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने नेत्रहीनों के लिए पढ़ने की एक नायाब पद्धति खोज निकाली थी।

सफलता अभी काफ़ी दूर

इस क्रांतिकारी आविष्कार को लुई ने छुट्टियों के दौरान घर पर किया था। अब वह पेरिस में अपने स्कूल जाने को आतुर था, जिससे कि वह उसे अपने नेत्रहीन साथियों को दिखा सके। वो अपने मित्रों की प्रतिक्रिया जानने को उत्सुक था।

लुई के साथियों को नई विधि बेहद पसंद आई। नया तरीका एकदम सरल था। नेत्रहीन बच्चे अक्षरों को स्पर्श से महसूस कर सकते थे। वह पढ़ सकते थे और उस विधि से लिख भी सकते थे। वे एक–दूसरे को पत्र लिख सकते थे। शायद जल्द ही इस तरीके के अनुसार नेत्रहीनों के लिए पुस्तकों का निर्माण भी हो सके?

नए अक्षरों की खबर स्कूल में आग की तरह फैल गई। स्कूल के डायरेक्टर ने लुई को बुलाया और उससे नए तरीके को समझाने को कहा।

''आप कुछ बोलिए और मैं आपको उसे लिख कर दिखाता हूं,'' लुई ने कहा।

डायरेक्टर साहब ने एक किताब उठाई और उन्होंने उसमें से पढ़ना शुरू किया। ''आप थोड़ी तेज़ गति से पढ़िए,'' लुई ने कहा। डायरेक्टर साहब जो कुछ पढ़ रहे थे लुई उन अक्षरों, शब्दों और वाक्यों को कागज़ पर सूजे से छेद बना–बना कर लिख रहा था। जब डायरेक्टर ने पढ़ना बंद किया तो लुई ने कागज़ को अपनी उंगलियों से हल्के से छुआ और उनके पढ़े वाक्यों को हू–ब–हू, बिना किसी गल्ती के पढ़ कर सुनाया। डायरेक्टर साहब गद्‌गद हो गए। उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि उनके ही स्कूल का, मात्र पंद्रह साल का एक नेत्रहीन लड़का ऐसी क्रांतिकारी पद्धति का आविष्कारक हो सकता है।

लेकिन डायरेक्टर साहब लुई के तरीके के प्रसार के लिए कुछ कर पाने में असमर्थ थे। स्कूल के पास पैसों का अभाव था। स्कूल को कुछ पैसा तो सरकार से अनुदान में मिलता था और बाकी पैसा धनी लोगों से दान के रूप

में मिलता था। स्कूल के पास लुई के तरीके से नेत्रहीनों के लिए पुस्तकें बनाने के लिए धन नहीं था। डायरेक्टर ने कई नामी–गिरामी लोगों और संस्थाओं को पत्र लिखे। ऐसे लोगों को चिट्ठियां लिखीं जिन्होंने अपना सारा जीवन नेत्रहीनों के कल्याण में बिताया था। परंतु कोई भी मदद करने के लिए आगे नहीं आया। लोग जवाब में सहानभूति के पत्र लिखते परंतु किसी की भी गंभीरता से नेत्रहीनों के कल्याण में रुचि नहीं थी।

इसी तरह चार बरस बीत गए। उन्नीस वर्ष की आयु में लुई ने स्कूल की अपनी पढ़ाई खत्म की। डायरेक्टर साहब उसकी अद्‌भुत प्रगति के शुरू से ही प्रशंसक थे। लुई ने लगभग सभी विषयों में पुरस्कार जीते थे। संगीत में तो वह पारंगत था ही। हाथ के काम में भी वो बहुत कुशल था। इसलिए डायरेक्टर साहब ने लुई से स्कूल में शिक्षक का पद संभालने की विनती की।

लुई ने खुशी से अपने स्कूल में टीचर का पद संभाला। लुई पेरिस में रहना चाहता था जिससे कि वह अपने आविष्कार के लिए लोगों से मिल सके। स्कूल में तनख्वाह कम थी, परंतु उसे रहने के लिए एक अलग कमरा दिया गया था। लुई को पढ़ाने में आनंद आता था। वह अपने पाठ पढ़ाने के लिए

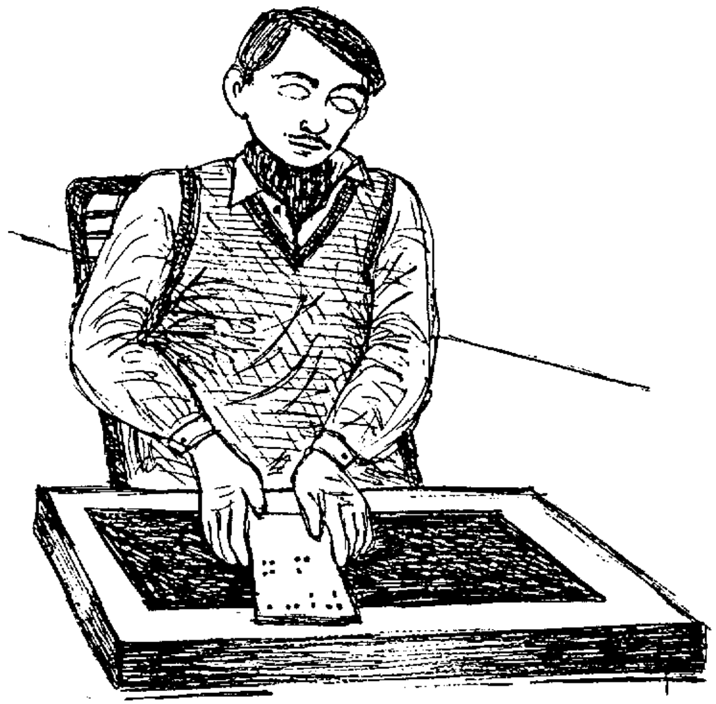

पूरी तैयारी करके जाता था। शुरू से ही छात्र, लुई को चाहने लगे। लुई कमज़ोर छात्रों पर अधिक ध्यान देता था। उसके छात्र चाहें कुछ भी गल्ती करें वह कभी भी उन पर खीजता नहीं था। एक बार उसे पेरिस के सबसे बड़े गिरजाघर में पियानो के प्रदर्शन के लिए आमंत्रित किया गया था।

संगीत के अलावा वह लगातार अपनी बिंदियों से लिखने वाली पद्धति पर शोध करता रहता। वह घंटों पुस्तकालय में बैठ कर उभरी हुई बिंदियों वाली किताबें बनाता रहता था जिससे कि उसके छात्र और अधिक पुस्तकों को पढ़ सकें। उसके कुछ मित्र जो पढ़ सकते थे वे लुई को सामान्य पुस्तकें पढ़ कर सुनाते और लुई अपनी अथक लगन और मेहनत से उन्हें नेत्रहीनों के लिए बिंदियों वाली पुस्तकों में बदल देता था।

इस कड़ी मेहनत का और पेरिस की नमी का उसकी सेहत पर खराब असर पड़ा। कभी–कभी वह इतना थक जाता था कि उससे पलंग से उठा ही नहीं जाता था। अक्सर सीढ़ियां चढ़ते वक्त वो हांफने लगता और रुक–रुक

कर ही ऊपर की मंज़िल तक पहुंच पाता। उसे खांसी बहुत आती थी। एक दिन डाक्टर ने उसकी जांच की। लुई को तपेदिक (टी बी) हो गई थी। उस समय इस भयानक बीमारी का कोई इलाज न था। अच्छा भोजन, साफ़ हवा और आराम ही इस बीमारी का इलाज समझा जाता था।

लुई ने डाक्टर की सलाह के अनुसार अपने जीवन को थोड़ा नियमित किया। अब वह सही समय से सोता था और हर रोज़ साफ़ हवा के लिए कुछ देर के लिए घूमने जाता था। डायरेक्टर को कहीं से थोड़ा सा अनुदान मिल गया और उन्होंने लुई से उसकी पद्धति के ऊपर एक किताब लिखने को कहा। इससे लुई को लगा कि उसके तरीके के प्रसार में मदद मिलेगी। डायरेक्टर ने इस किताब की प्रतियां तमाम प्रतिष्ठित लोगों को भेजीं। परंतु दुख की बात यह है कि उनमें से किसी ने जवाब तक नहीं दिया।

पुराने डायरेक्टर का इस बीच तबादला हो गया। नए डायरेक्टर का लुई के साथ व्यवहार ठीक नहीं था। लुई की एक बार फिर तबियत खराब हो गई। इस बार उसे कुछ महीनों के लिए घर जाना पड़ा। जब वह स्कूल वापिस लौट कर आया तो उसे पता चला कि उसकी गैरमौजूदगी में नए डायरेक्टर ने उसके द्वारा बनाई गई सभी पुस्तकों को जला दिया था। लुई को यह सुन कर गहरा धक्का लगा।

स्थापित लोगों को लुई की पद्धति से डर था। अगर नेत्रहीन लुई की पुस्तकों को खुद पढ़ना सीख जाएंगे तो स्कूल में सभी टीचरों की छुट्टी हो जाएगी। फिर डायरेक्टर की भी ज़रूरत नहीं होगी। डायरेक्टर ने स्कूल में लुई की पद्धति पर पाबंदी लगा दी। क्योंकि लुई का तरीका इतना सरल था इसलिए छात्र उसे किसी भी हालत में छोड़ना नहीं चाहते थे। अंत में नए डायरेक्टर को अपनी गल्ती समझ में आई। वो ज़बरदस्ती छात्रों के हाथों से बिंदियों वाले कागज़ और सूजे छीन सकते थे। परंतु वो छात्रों के सपनों पर लगाम नहीं लगा सकते थे। अंत में डायरेक्टर ने लुई सब छात्रों को लुई के तरीके को इस्तेमाल करने की इज़ाज़त दे दी।

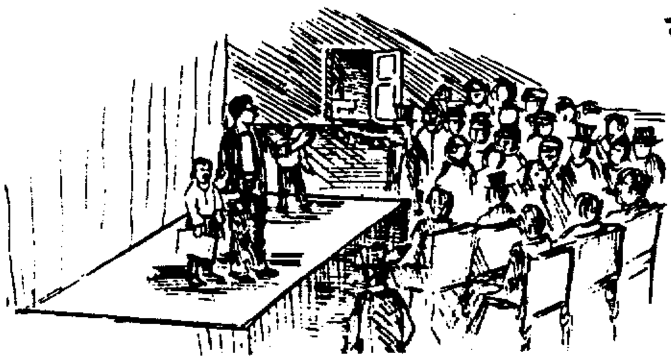

नए तरीके का प्रदर्शन

फिर एक दिन डायरेक्टर ने लुई के तरीके प्रदर्शन के लिए बहुत से महत्वपूर्ण लोगों को आमंत्रित किया। इसके लिए स्कूल को अच्छी तरह सजाया गया। पहले तो कुछ लोगों ने भाषण दिए और अंत में लुई से नए तरीके के प्रदर्शन के लिए कहा गया। इसके लिए डायरेक्टर एक नेत्रहीन छात्रा को सामने स्टेज पर लाए। फिर एक पुस्तकों की मोटी गड्डी के बीच में से उन्होंने एक पुस्तक निकाली और उसको बीच में से खोल कर पढ़ने लगे। वह छात्रा उनके बोले शब्दों को कागज़ पर सूजे से बिंदियां बनाकर, लुई के अनुसार लिखने लगी। जब डायरेक्टर ने पढ़ना बंद किया तो फिर उस छात्रा ने अपनी उंगलियों से कागज़ पर उभरी बिंदियों को छूकर पढ़ना शुरू किया। छात्रा ने कोई भी गल्ती नहीं की। सब लोग इस प्रदर्शन से बहुत प्रभावित हुए। परंतु कुछ लोगों ने कहा कि उनके साथ धोखाधड़ी हुई है। उन्हें लगा कि लड़की ने डायरेक्टर द्वारा पढ़ा हुआ हिस्सा पहले से ही रट रखा था।

लुई ने लोगों से शांत होकर बैठने को कहा। फिर लुई दो नेत्रहीन छात्रों को मंच पर लाया। एक छात्र को दूर के कमरे में भेज दिया गया। फिर श्रोताओं में से किसी भी एक व्यक्ति को मंच पर आने को कहा गया। इस बीच मंच पर खड़ा एक छात्र पढ़े गए शब्दों को सूजे से कागज़ पर लिखता रहा। उसके बाद दूर कमरे से दूसरे छात्र को बुलाया गया और उसे बिंदियों वाला कागज़ थमा दिया गया। दूसरे छात्र ने बिना किसी गल्ती के उसे पढ़ कर सुनाया। इस बार गल्ती या धोखे की कोई संभावना नहीं थी। सब लोग खड़े हो गए और सारा माहौल तालियों से गूंज उठा। लुई के तरीके को पहली सफलता मिली।

1844 में लुई ब्रेल की तबियत बहुत खराब हो गई और उन्हें स्कूल की नौकरी छोड़नी पड़ी। उनकी पद्धति अब ब्रेल लिपि के नाम से जानी जाने लगी थी। वह अब तपेदिक से कमज़ोर हो गए और उन्हें अधिकतर समय पलंग पर लेटे ही बिताना पड़ता था। रोज़ाना उनसे बहुत से लोग मिलने के लिए आते थे। लाखों–करोड़ों नेत्रहीनों के जीवन को अंधकार से मुक्त करने वाली इस महान आत्मा का देहांत 6 जनवरी 1852 को हुआ।

ब्रेल की मृत्यु के पश्चात ही उनकी पद्धति का प्रसार सारे संसार में हुआ। ब्रेल की मृत्यु के छह साल बाद अमरीका में पहली बार नेत्रहीनों के स्कूलों में ब्रेल की पुस्तकें इस्तेमाल होने लगीं। उनकी मृत्यु के सौ वर्ष बाद 1952 में फ्रांस में एक बहुत बड़ा जलूस निकला। उसमें दुनिया की जानी–मानी हस्तियां थीं – राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आदि। परंतु, जलूस में सबसे अधिक तादाद नेत्रहीनों की थी जिनकी ज़िंदगी में लुई ब्रेल ने उम्मीद की एक नई किरण जगाई थी।
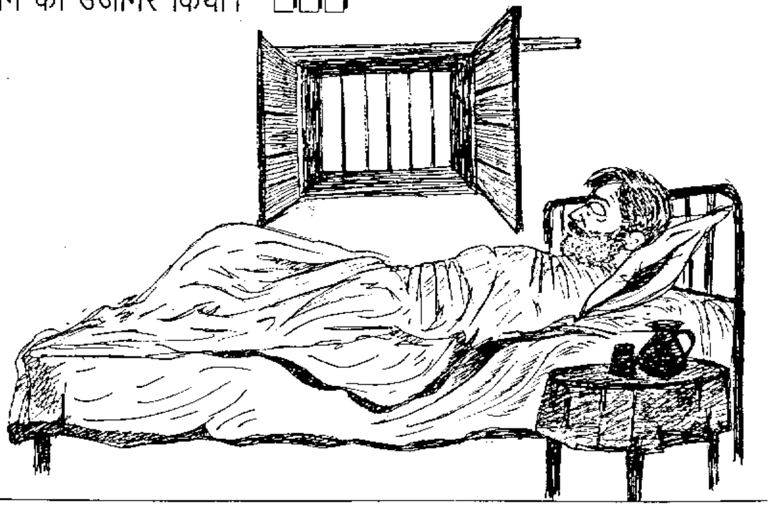
बचपन में एक सूजे के चुभने से ही लुई ब्रेल की आंखों की रोशनी जाती रही थी। उसी तरह के सूजे से ही बाद में लुई ने नेत्रहीनों के लिए ब्रेल लिपि का इज़ाद किया। अपनी आंखों की रोशनी खोकर उन्होंने सारे नेत्रहीनों के जीवन को उजागर किया। ❑❑❑